Note : If you would like to view or download the entire book please go through home page of Jain eLibrary Website – www.jainelibrary.org and register your e-mail id (or sign in if previously registered).

Nyayapraveshakashastram

Folder No.	002682
Granth Name	Nyayapraveshakashastram
Editor	Jambuvijayji
Publisher	Motilal Banarasidas Delhi
Edition	1
Year	2009
Pages	192

न्यायप्रवेशकशास्त्रम्

फोल्डर नं.	००२६८२
ग्रन्थ	न्यायप्रवेशकशास्त्रम्
संपादक	मुनि श्री जम्बुविजयजी
प्रकाशक	मोतीलाल बनारसीदास – दिल्ही
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	२००९
पृष्ठ	१९२

मुख्य टाईटल
विषयानुक्रम
Preface
प्रस्तावना --
प्रास्ताविकं किञ्चित
न्यायप्रवेशकशास्त्रम १-२७ सूत्राणि -- १-२६
शास्त्रार्थसंग्रह -- १
पक्षादिवचनानां साधनत्वम -- २
पक्षस्वरुपम -- २
हेतुस्वरुपम -- २
दृष्टान्तस्वरुपम --- ३
साधनावयवस्वरुपम -- ३
पक्षाभासस्वरुपमं भेदाश्र्च --- ३
पक्षाभासभेदस्वरुपम -- ४

हेत्वाभासभेदा -- ४
असिद्धभेदवर्णनम -- ४
अनैकान्तिकभेदवर्णनम --- ५-६
विरुद्धभेदवर्णनम --- ७
दृष्टान्ताभासभेदा --- ८
साधर्म्येण दृष्टान्ताभासभेदस्वरुपम --- ८
वैधर्म्येण दृष्टान्ताभासभेदस्वरुपम -- ८
पक्ष – हेतु दृष्टान्ताभासानां साधनाभासत्वम-- १०
प्रमाणभेदा तत्स्वरुपं च -- १०
प्रत्यक्षाभासा - ऽनुमानाभासयो स्वरुपम --- १०
दूषण – दूषणाभासस्वरुपम --- १०-११
शास्त्रोपसंहार -- ११
न्यायप्रवेशकवृत्ति -- १३-५५
न्यायप्रवेशकवृत्तिपञ्जिका --- ५६-१२६
पञ्च परिशिष्टानि -- १२७-१६१
R मध्ये विधमाना न्यायप्रवेशकटीकापाठभेदा । --- १२७
आचार्यश्रीहरिभद्रसूरिविरचितायां टीकायां विधमाना साक्षिपाठा । ------------------------------- १३०
पार्श्वदेवगणिविरचितायां पञ्जिकायां विधमाना साक्षिपाठा । ------------------------------------ १३१
पञ्जिकायां निर्दिष्टानि ग्रन्थ – ग्रन्थकृतां नामानि ।--- १३२
Preface For Narthaang Edition--133-155
Narthang edition of Nyayapravesaka – Tibetan translation -----------------------------136-148
Peking edition of Nyayapravesaka – Tibetan translation --------------------------------149-161

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org